Toppersnotes
Unleash the topper in you

# 1ST – ग्रेड

## स्कूल व्याख्याता

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

प्रथम – प्रश्न पत्र

भाग – 2

# भारत का इतिहास, राजव्यवस्था एवं राजस्थान का भूगोल

SIERRA INNOVATIONS

# RPSC 1ST GRADE

## भारत का इतिहास, राजव्यवस्था एवं राजस्थान का भूगोल


| | भारत का इतिहास | |
|---|---|---|
| 1. | गुप्तकाल में कला, विज्ञान, साहित्य का विकास | 1 |
| 2. | मुगलकाल में साहित्य, स्थापत्य कला का विकास | 9 |
| 3. | 1857 का स्वतंत्रता आन्दोलन | 19 |
| 4. | भारत के प्रमुख राष्ट्रवादी नेता | 22 |
| 5. | महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन | 37 |
| 6. | वल्लभ भाई पटेल, नेहरू, मौलाना आजाद, बी.आर. अम्बेडकर | 51 |
| 7. | सामाजिक-धार्मिक पुनर्जागरण | 58 |
| | **भारत का संविधान** | |
| 1. | संविधान सभा का उद्भव एवं संविधान निर्माण | 65 |
| 2. | भारतीय कार्यपालिका, राष्ट्रपति एवं उसकी शक्तियाँ और मंत्रिपरिषद् | 88 |
| 3. | प्रधानमंत्री और उसकी शक्तियाँ | 102 |
| 4. | संसद | 105 |
| 5. | लोकसभा अध्यक्ष एवं उसके कार्य | 115 |
| 6. | उच्चतम न्यायालय : संगठन एवं शक्तियाँ | 117 |
| 7. | भारत में चुनाव | 121 |
| 8. | राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न आयोग एवं प्रमुख बोर्ड | 124 |

# राजस्थान का भूगोल


| | | |
|---|---|---|
| 1. | राजस्थान का सामान्य परिचय | 132 |
| 2. | राजस्थान का भौतिकीय स्वरुप | 136 |
| 3. | नवीनतम संभाग एवं जिला परिदृश्य | 139 |
| 4. | राजस्थान का भौगोलिक विभाजन | 156 |
| 5. | जल संसाधन | 166 |
| 6. | प्रमुख सिंचाई परियोजना | 188 |
| 7. | जलवायु | 203 |
| 8. | मृदा | 214 |
| 9. | कृषि | 218 |
| 10. | पशुधन | 227 |
| 11. | खनिज तत्त्व | 239 |
| 12. | ऊर्जा संसाधन | 256 |
| 13. | पर्यटन | 265 |
| 14. | उद्योग | 297 |
| 15. | जनसँख्या | 303 |

# 1. गुप्तकाल में कला, विज्ञान, साहित्य का विकास

- तीसरी शताब्दी के अन्त में प्रयोग के निकट कौशाम्बी में गुप्त वंश का उदय हुआ।
- गुप्त वंश का संस्थापक श्री गुप्त को माना जाता है। (275 ई.)
- गुप्त वंश को भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल माना जाता है, क्योंकि इस काल में कला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में सबसे ज्यादा उन्नति हुई ।
- बर्नेट इतिहासकार ने इसकी तुलना पेरीक्लीज युग से की है।
- इस युग में ब्रह्मा, विष्णु और महेश की त्रिमूर्ति के रूप में पूजा शुरू हुई।
- गुप्तकाल में सबसे ज्यादा विष्णु की पूजा होती थी (इष्टदेव)। भारत में मंदिरो का उदय या जन्म गुप्तकाल में ही हुआ।
- गुप्तकाल में ही रामायण और महाभारत का अन्तिम रूप से सम्पादन हुआ।
- गंगा, जमुना की मूर्ति गुप्तकाल की देन है।
- गुप्तकाल में सांमतवाद का उदय हुआ।
- अजन्ता की गुफा (औरंगाबाद म.प्र.) सं. 16,17,19 गुप्त काल की ही देन है तथा बाघ की गुफाएँ भी गुप्तकाल में बनी। अजन्ता की गुफाएँ बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है।
- गुप्त शासकों की भाषा संस्कृत और लिपि ब्राह्मी थी।
- गुप्त सम्राटों का राष्ट्रीय प्रतीक गरूड़ था।
- गुप्त काल के प्रसिद्ध दो बन्दरगाह थे।
  1. भड़ोच 2. ताम्रलिपि
- गुप्तकाल की शिल्पकला का जन्म विशेषतः मथुरा शैली के प्रतीमानों पर आधारित है।
- गुप्तकाल का महरौली का लौह स्तम्भ (दिल्ली) उस समय की वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है।
- गुप्त सम्राट वैष्णव धर्म के अनुयायी थे । गुप्तकाल में दास प्रथा विद्यमान थी लेकिन दहेज प्रथा, पर्दाप्रथा, बालविवाह विद्यमान नहीं थी।
- गुप्त साम्राज्य की आय का मुख्य स्त्रोत भूमिकर था जो कि उपज का 1/6 भाग था ।
- गुप्त काल में राजस्थान में तीन गणराज्य थे।
  (1) अर्जुनायन (2) मालव (3) यौधेय

गुप्त साम्राज्य से निम्न प्रमुख शासक हुए –

**(1) श्री गुप्त** 275 – 300 ई. (संस्थापक)

**(2) घटोत्कच** 300 – 310 ई. (महाराज की उपाधि)

**(3) चन्द्रगुप्त प्रथम** 319 / 320 – 328/335 ई.

- वास्तविक संस्थापक
- महाधिराज की उपाधि धारण करने वाला
- राजा – रानी के सिक्के चलाने वाला
- गुप्त संवत् की स्थापना – 319 ई.
- लिच्छवी राजकुमारी से विवाह ओर कुमार देवी से विवाह
- गुप्त वंशावली में सबसे पहला शासक चन्द्रगुप्त प्रथम मिलता है।

**(4) समुद्रगुप्त 328 ई.–335 ई.**

- विंसेट स्मिथ ने इनको भारत का नेपोलियन कहा है।
- मूलनाम – कच
- इसके समय प्रयाग प्रशस्ति हरिषेण द्वारा लिखी गई। इसमें इनको लिच्छवि दौहित्र बतायागया।
- सबसे प्रतापी शासक था।
- 100 युद्धों का विजेता + धर्म की प्राचीर + कवि राजा की उपाधि

## विजय नीति

- **उत्तरी भारत में नीति** ''प्रसभोद्धरण–(प्रत्यक्ष नियंत्रण)''
- उत्तरी भारत के 12 राज्यों के प्रति अपनाई गयी नीति।
- प्रयाग प्रशस्ति की पंक्ति संख्या 21 में उल्लेखित है।
- पश्चिमी या विदेशी राज्यों के प्रति नीति–
  - ➢ आत्मनिवेदन, कन्योपायन, गुरूत्वमंदक
  - ➢ प्रयाग प्रशस्ति की पंक्ति संख्या 23 व 24 में उल्लेख है।

## दक्षिण के 12 राज्यों के प्रति नीति

- ग्रहणमोक्षानुग्रह
- हेमचन्द्र राय चौधरी – दक्षिण की विजय को धर्म विजय कहा।

## सीमावर्ती राज्यों के प्रति नीति –

- उत्तरी पूर्वी पर स्थित राज्यों के प्रति –
- सर्वकर, दानाज्ञाकरण, प्राणागमन
- प्रयाग प्रशस्ति की संख्या 22 में उल्लेखित।
  1. समतर (पूर्वी बंगाल)
  2. कामरुप (असम)
  3. डबाक (असम के पास)
  4. कर्तपुर (जालंधर)
  5. कमायुँ गढ़वाल (म.प्र.)

- समुद्रगुप्त के काल में श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने समुन्द्र गुप्त से उरुवेला (बोधगया) में मंदिर बनवाने की अनुमति माँगी थी।
- समुद्रगुप्त के दरबार में वसुबंधु नामक बौद्ध भिक्षु का निवास था जिससे पता चलता है कि गुप्त वंश के शासक धार्मिक रूप से कट्टर नहीं थे।
- समुद्रगुप्त को उसके सिक्कों पर वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।
- समुद्रगुप्त के द्वारा अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया गया।

## समुद्रगुप्त के प्रचलित सिक्के

1. **गरूढ़ प्रकार**
   मुख्य भाग पर – राजा की आकृति, गरूढ़ ध्वज
   पृष्ठ भाग पर – उपाधि पराक्रम
2. **धनुर्धारी**
   मुख्य भाग पर – राजा की आकृति, धनुष बाण
   पृष्ठ भाग पर – अप्रतिरथ
3. **परशु प्रकार**
4. **अश्वमेघ**
5. **वीणा प्रकार**
6. **व्याघ्र हनन**
   - एरण अभिलेख में समुद्रगुप्त की तुलना यम व कुबेर से की गयी है।
   - समुद्रगुप्त को कविराज की उपाधि से भी जाना जाता है।

- प्रयाग प्रशस्ति में सीमावर्ती राज्यों की विजय को धरणीबंध अर्थात् विश्व विजय कहा गया।
- सिंहलद्वीप शासक मेघवर्ण ने बौद्ध बिहार बनाने की अनुमति माँगी थी।

**(5) रामगुप्त 375 ई.**

**(6) चन्द्रगुप्त द्वितीय 375 ई.–** 414/415 ई. (अन्य नाम – देवगुप्त, देवश्री, देवराज)

- विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- प्रथम चीनी यात्री फाह्यान आया।
- इसे सक्कारी भी कहा जाता है।
- इसके दरबार में 9 रत्न थे–
- कालिदास, धन्वन्तरी, अमरसिंह, बेताल भट्ट शंकु, क्षपणक, वराहमिहिर, बररूची, घटकपरि

## फाह्यान का विवरण

- चीनी यात्री
- अर्थ – धर्माचार्य
- पुस्तक – फू–को–की
- फाह्यान स्थल मार्ग से सर्वप्रथम गोमती विहार ⟶ मध्य देश ⟶ जैतवन विहार ⟶ पाटलिपुत्र ⟶ ताम्रलिप्ति बन्दरगाह ⟶ दक्षिणी–पूर्वी द्वीप ⟶ जल मार्ग से फाह्यान स्थल मार्ग से आया व जल मार्ग से वापिस गया।
- फाह्यान ने मध्य देश (ब्राह्मण देश) को चन्द्रगुप्त–II का क्षेत्र बताया।
- फाह्यान के अनुसार भारत में मृत्युदण्ड की सजा नहीं दी जाती हैं।
- भारतीय लोग मांस–मदिरा, लहसून, प्याज का सेवन नहीं करते थे।
- राजद्रोह के आरोप में अपराधी का दाहिना हाथ काट लिया जाता था।
- व्यापार में भारतीय लोग कोडियों का प्रयोग करते है।
- फाह्यान चाण्डाल नामक जाति का उल्लेख करता है।
- गढ़वा अभिलेख में चन्द्रगुप्त II को परमभागत की उपाधि दी गई है।
- दिल्ली से प्राप्त महरौली के लौह स्तम्भ का संबंध चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य से स्थापित किया जाता है।
- चन्द्रगुप्त II ने पाटलिपुत्र के अलावा उज्जैन को भी अपनी राजधानी बनाया था।
- चन्द्रगुप्त II ने वैवाहिक संबंधों के माध्यम से अपने सम्राज्य का विस्तार किया।
  1. नागवंश (मथुरा व अहिछत्रपुर)
- राजकुमारी–कुबेरनागा से विवाह किया तथा कुबेरनागा की पुत्री प्रभावती गुप्त थी।
- प्रभावती का विवाह चन्द्रगुप्त II ने वाकाटक शासक रूद्रसेन II के साथ किया।
- प्रभावती रूद्रसेन II की मृत्यु के बाद शासन चलाने वाली भारत की प्रथम महिला शासिका थी।
- चन्द्रगुप्त वाकाटकों के सहयोग से शको को पराजित किया व इसके उपलक्ष्य में चाँदी के व्याघ्र प्रकार के सिक्कों का प्रचलन करवाया।
- चन्द्रगुप्त II द्वारा चलाये गये सिक्के –
  1. धनुर्धारी
  2. छत्रधारी
  3. पर्यङक सिक्के
  4. सिंह निहन्ता
  5. अवश्वरोही प्रकार के

### (7) कुमारगुप्त (414–455 ई.)

- श्री महेन्द्र, महेन्द्रादित्य की उपाधि
- तुमैन अभिलेख में – शरदकालीन सूर्य के समान बताया गया।
- हेनसांग के अनुसार – शकरादित्य।
- गदवा अभिलेख में परम भागवत्।
- नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना की।
- नालन्दा विश्वविद्यालय को ऑक्सफोर्ड ऑफ महायान बौद्ध के नाम से भी जाना जाता है।
- इस विश्वविद्यालय में धर्मगंज नामक एक पुस्तकालय था जो तीन भागों में बँटा हुआ था रत्नोदधि, रत्नरजंक, रत्नसागर
- विलसढ़ अभिलेख में गुप्त शासकों की वशांवली प्राप्त होती है।
- सर्वाधिक अभिलेख, सर्वाधिक सिक्कों का प्रचलन किया।

### (8) स्कन्द गुप्त (455–467 ई.)

- हुणों (मलेच्छों) पर विजय प्राप्त की
- सुदर्शन झील की मरम्मत करवायी
- चीन में 466 ई. में राजदूत को भेजा
- अन्तिम शासक – भानुगुप्त/विष्णुगुप्त
- गुप्त काल में विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में बहुत अधिक उन्नति हुई।

## गुप्त काल में निम्न प्रमुख वैज्ञानिक/विद्वान हुए–

**(1) आर्यभट्ट –** ये एक प्रमुख वैज्ञानिक और गणितज्ञ थे। इनका जन्म 476 ई. में कुसुमपुर पटना में हुआ। आर्यभट्ट ने ही शून्य सिद्धान्त और दशमलव प्रणाली का विकास किया। इनकी दो पुस्तके प्रसिद्ध हैं– आर्यभट्टीयम् और सूर्य सिद्धान्त।

चन्द्रग्रहण व सूर्यग्रहण का वर्णन किया। पाई का मान बताया।

**(2) वराहमिहिर**– यह एक खगोलशास्त्री थे। इनका जन्म अवन्ती में हुआ। इन्होंने प्रसिद्ध पुस्तक पंच सिद्धान्तिका लिखी इसके अलावा वृहतसंहिता व लघु जातक भी इन्होंने लिखी।

**(3) धन्वन्तरी –** इन्हें चिकित्सा शास्त्र का जनक माना जाता है। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक व नवनीतिकम् है।

**(4) ब्रह्मगुप्त –** यह एक गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे। इन्होनें ब्रह्मस्फूट नामक ग्रंथ लिखा नियमदिया कि "प्रकृति के नियम के अनुसार सभी चीजें धरती पर गिरती है"।

**(5) सुश्रुत –** यह एक वैद्य थे। इन्होंने प्रसिद्ध ग्रन्थ सुश्रुत संहिता लिखी थी। यह शल्य चिकित्सा के जनक भी माने जाते हैं।

**(6) पॉलकाव्य** ने हस्तायुर्वेद नामक ग्रन्थ की रचना की जो हाथियों की चिकित्सा से संबंधित है।

**(7) होलीहोत्र/शालिहोत्र ऋषि**– इन्होंने घोड़े के उपचार के लिये अश्वशास्त्र नामक ग्रन्थ की रचना की। इन्होने अणु सिद्धान्त का प्रतिपादन और प्रचार प्रचार किया।

## कला और साहित्य

- गुप्तकाल में कला और साहित्य के क्षेत्र में भी उन्नति हुई जिसके कारण इस युग को स्वर्णयुग कहा जाता है।

- इस युग में साहित्य के क्षेत्र में बहुत ज्यादा विकास हुआ। कई महत्वपूर्ण कवि, साहित्यकार, विद्वान और कथाकार हुए है। जैसे – कवि कालिदास, विशाखदत्त, दण्डिन, अमरसिंह, भाष, वत्सभट्टी आदि। इन्होंने कई महत्वपूर्ण रचनाओं का निर्माण भी किया।
- गुप्तकाल में पहली बार किसी सती होने के प्रमाण 510 ई. के भानुगुप्त के एरण अभिलेख में मिलता है। राजा गोपराज की पत्नी सती होती है।
- अजन्ता की खोज सर जेम्स अलेक्जेंडर ने की थी।
- 16 वीं गुफा में बुद्ध के गृहत्याग का चित्रण।
- 17 वीं गुफा में बुद्ध अपनी पत्नी से भिक्षा मांगने के चित्र।
- 17 वीं गुफा के चित्रों को चित्रशाला कहा गया है।
- ब्रह्मगुप्त ने न्यूटन के गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त को न्यूटन से पहले खोजा था।
- नागार्जुन रसायन व धातु विज्ञान का विद्वान था।

## गुप्तों की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों के मत निम्न हैं –

| विद्वान | मत |
|---|---|
| के. पी. जयसवाल | शूद्र |
| एलन अलतेकर, रोमिलाथापर | वैश्य |
| गौरीशंकर ओझा, रमेशचंद्र मजुमदार, चट्टोपाध्याय | क्षत्रिय |
| हेमचन्द्र राय चौधरी | ब्राह्मण |

## कला और साहित्य (गुप्तकाल में सांस्कृतिक योगदान)

- कला और साहित्य के विकास की दृष्टि से गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का ''क्लासिकी युग अथवा स्वर्णयुग'' कहा गया है।
- गुप्तकाल में ही मंदिर निर्माण कला का जन्म हुआ था।

### गुप्तकाल के प्रमुख मंदिर–

भूमरा (नागोद)– मध्यप्रदेश – शिव मंदिर (सबसे पहला और प्राचीन)
तिगवा (जबलपुर) – मध्यप्रदेश – विष्णु मंदिर
देवगढ़ (झाँसी) – उत्तरप्रदेश – दशावतार मंदिर
सिरपुर (मध्यप्रदेश) – लक्ष्मण मंदिर (ईंटो का मंदिर)
भीतरगाँव (कानपुर) – ईंटो का बना मंदिर (मेहराब का प्रयोग)

- सर्वाधिक मंदिर और सर्वाधिक पूजा विष्णु देवता की होती थी, ये गुप्त शासकों के ईष्ट देवता थे।
- सम्राटों का राष्ट्रीय प्रतीक गरूड़ था।
- गुप्तकाल में ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शिव) की त्रिमूर्ति के रूप में पूजा प्रारम्भ हुई।

सुदर्शन झील के निर्माण और जीर्णोद्धार से सम्बन्धित विवरण –

| गुप्त मौर्य (निर्माण) | अधिकारी |
|---|---|
| चन्द्रगुप्त मौर्य | पुष्यगुप्त – मौर्यवंश |
| अशोक (जीर्णोद्धार) | तुषास्क – मौर्यवंश |
| रूद्रदामन (जीर्णोद्धार) | सुविशाख – सातवाहन वंश |
| स्कन्दगुप्त (जीर्णोद्धार) | चक्रपालित – गुप्त वंश |

## गुप्तकाल की जानकारी के अभिलेख

- प्रयाग प्रशस्ति (लेखक हरिषेण) – इसमें समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का विवरण है।
- भितरी अभिलेख, जूनागढ़ प्रशस्ति (स्कन्दगुप्त से सम्बन्धित)
- मंदसौर प्रशस्ति (लेखक वत्सभट्टी), मानकुंवर अभिलेख, विलसढ़ का स्तंभ अभिलेख (कुमार गुप्त से सम्बन्धित)
- एरण अभिलेख (भानुगुप्त से सम्बन्धित)
- महरौली प्रशस्ति, साँची शिलालेख, उदयगिरि का शिलालेख, मथुरा स्तंभलेख, गढ़वा का शिलालेख (चन्द्रगुप्त द्वितीय से सम्बन्धित)
- इस काल का सर्वाधिक भव्य अवशेष दिल्ली का सुप्रसिद्ध लौह स्तंभ (महरौली) है।
- गुप्तकाल की सबसे बड़ी विशेषता ब्राह्मण धर्म व हिन्दू धर्म का पुनरूत्थान था।
- गुप्तकाल में विज्ञान ने बहुत अधिक उन्नति की। इस क्षेत्र में सबसे अधिक प्रगति गणित व ज्योतिष विज्ञान में हुई।

## प्रमुख वैज्ञानिक ओर विद्वान हुए–

- आर्यभट्ट, वराहमिहिर, वागभट्ट, धन्वन्तरि, सुश्रुत, शालिहोत्र ऋषि, ब्रह्मगुप्त, भास्कर प्रथम, नागार्जुन आदि।
- गुप्तकालीन चित्रकला में शून्य सिद्धांत व दशमलव प्रणाली का विकास हुआ था।
- गुप्त कालीन चित्रकला के सर्वोत्कृष्ट नमूने अजंता और बाघ की गुफाओं में मिलते हैं।
- गुप्त काल में वर्ण व्यवस्था विद्यमान थी। गुप्तकाल में षड़्दर्शन का विकास हुआ जो कि भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषता है।
- गुप्त काल संस्कृत भाषा और साहित्य के विकास के दृष्टिकोण से स्वर्णयुग माना जाता है।
- गुप्त शासकों ने संस्कृत को अपनी राज भाषा घोषित की।
- गुप्त अभिलेखों की भाषा संस्कृत व लिपि ब्राह्मी में थी।

## गुप्तकाल में कला, विज्ञान, साहित्य

- गुप्तकाल कला साहित्य के विकास की दृष्टि से भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग/क्लासिकी युग कहलाता है।
- इस युग में मथुरा, बनारस, पटना कला के प्रमुख केन्द्र थे।

### (1) मंदिर निर्माण कला

- नागर शैली का बाहुल्य था।
- गुप्तकाल में प्रधान शिखरों के साथ गौण शिखरों का निर्माण हुआ।
- देवगढ़ का दशावतार मंदिर भारतीय मंदिर निर्माण में शिखर का पहला उदाहरण है।
- भितरगाँव (कानपुर) का मंदिर ईंटों से बना पहला मंदिर है।

### (2) स्तूप

- सारनाथ का धमेख स्तूप ईटों का बना है।

### (3) गुफाएँ

- अजन्ता की गुफाएँ कुल 29 (5 चैत्य + 24 विहार)
- बाघ की गुफाएँ – धार जिला (मध्यप्रदेश)
  - कुल सं.–09 बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है।
  - खोज – 1818 डेंजर फिल्ड

### (4) मूर्तिकला

- मथुरा, सारनाथ, पाटलिपुत्र मुख्य क्षेत्र है।
- अलंकृत प्रभामण्डल, केश सज्जा, मुद्रा आसन्न, सरलता विशेषता
- गुप्तकाल की तीन बुद्ध मूर्तियाँ उल्लेखनीय है।
  - ➢ सारनाथ की बुद्ध मूर्ति
  - ➢ मथुरा की बुद्ध मूर्ति
  - ➢ सुल्तानगंज की ताम्र निर्मित बुद्ध मूर्ति
- देवगढ़ की वराह की मूर्ति को अन्नतशायी कहा गया है।
- अजन्ता की गुफाओं में अब गुफा नं. (1–2,9–10,16–17) से ही चित्र मिलते हैं।
- अजन्ता की 16 वीं गुफा को उत्खनित करने का श्रेय वराहदेव को है। इस गुफा में मरणासन्न राजकुमारी का बहुत सुन्दर चित्र है।
- 16 वीं गुफा में बुद्ध महाभिनिष्क्रमण एवं अंधे तपस्वी माता–पिता का चित्र भी अंकित है।
- पहली, दूसरी गुफाओं में फारस देश के राजदूत का चित्र मिलता है।
- अजन्ता की पहली गुफा में कामदेव (मार विजय) का चित्र है।

## गुप्त कालीन साहित्य

गुप्तकाल के एक अभिलेख में एक लाख श्लोकों वाली महाभारत का उल्लेख मिलता है।

### शूद्रक का मृच्छकटिकम –

- यह 10 अंको में विभाजित गुप्तकालीन नाटक है।
- इसमें राज परिवार के स्थान पर जनसाधारण को नाटक का पात्र बनाया गया है।

### अमर सिंह का अमरकोष

- इस ग्रंथ में तीन काण्ड, 1533 श्लोक हैं।

### कालिदास

- कालिदास को स्मिथ ने भारत का शेक्सपियर कहा है।
- पुलकेशियन के ऐहोल प्रशस्ति में कालिदास, भारवी के नामों का उल्लेख मिलता है।
- **कुमार सम्भव** – यह 17 सर्गो का महाकाव्य है। इसमें कार्तिकेय के जन्म की कथा का वर्णन है।
- **रघुवंश** – 19 सर्गो का महाकाव्य है। इसमें इक्ष्वाकु वंशीय राजाओं का वर्णन है।
- **ऋतुसंहार** – यह खण्डकाव्य है। इसमें ऋतुओं का वर्णन किया गया है।
- **मेघदूतम्** – यह खण्डकाव्य है। यह खण्डकाव्य दो भागों में विभक्त है पूर्वमेघ व उतरमेघ/ इसमें यक्ष व यक्षणी के विरह का मार्मिक चित्रण किया गया है।
- **मालविकाअग्निमित्रम्** – प्रथम ऐतिहासिक नाटक जो पाँच आंको में विभक्त है। इसमें राजकुमारी मालविका और राजकुमार अग्निमित्र की प्रेम कथा का वर्णन है।
- **विक्रमोर्वशीय** – इस नाटक में राजा विक्रय व अप्सरा उर्वशी के विवाह का वर्णन किया गया है।

### गुप्तकालीन अन्य साहित्यकार

भास – स्वप्नवासवदत्ता
भवभूति – मालतीमाधव
विष्णु शर्मा – पंचतंत्र

भारवी – किर्रातार्जुनीयम्
माघ – शिशुपालवध
श्री हर्ष – नैषधचरित
विशाखदत्त – मुद्राराक्षस
वात्स्यायन – कामसूत्र

## गुप्तकाल की महत्वपूर्ण रचनाएँ

| पुस्तक | लेखक | पुस्तक | लेखक | पुस्तक | लेखक |
|---|---|---|---|---|---|
| कुमार संभव (महाकाव्य) | कालिदास | चारूदत्ता | भास | वृहत्संहिता | वराहमिहिर |
| रघुवंश (महाकाव्य) | कालिदास | अरूभंग | भास | पंचसिद्धांतिका | वराहमिहिर |
| ऋतु संहार (खण्डकाव्य) | कालिदास | हर्षचरित | बाण | ब्रह्म सिद्धांत | आर्य भट्ट |
| मेघदूत | कालिदास | कादम्बरी | बाण | आर्य भट्टीयम | आर्य भट्ट |
| मालविकाग्निमित्रम्(नाटक) | कालिदास | नागानन्द | हर्ष | सूर्य सिद्धांत | आर्य भट्ट |
| अभिज्ञानशांकुतलम्(नाटक) | कालिदास | प्रियदर्शिका | हर्ष | न्यायावतार | सिद्धसेन |
| विक्रमोर्वशीयम | कालिदास | रत्नावली | हर्ष | पंचतन्त्र | विष्णु शर्मा |
| मुद्राराक्षस | विशाखदत्त | किरातार्जुनियम | भारवि | नीतिशास्त्र | कामंदक |
| देवी चन्द्रगुप्त | विशाखदत्त | रावण वध | वत्सभट्टि | कामसूत्र | वात्स्यायन |
| काव्यदर्शन | दण्डिन | अमर कोष | अमर सिंह | चरक संहिता | चरक |
| दशकुमार चरित | दण्डिन | चन्द्रव्याकरण | चन्द्रगोमी | मृच्छकटिकम | शूद्रक |
| स्वप्नवासवदत्ता | भास | विसुद्धिधिमग्ग | बुद्धघोष | योगाचार | असंग |

## नागार्जुन

- रसायन और धातुविज्ञान के ज्ञाता थे। इन्होने इसक चिकित्सा का आविष्कार किया और बताया कि सोना व चाँदी आदि खनिजों के रासायनिक प्रयोग से रोगों की चिकित्सा हो सकती है।

## तकनीकी का विकास

- धातुओं को रासायनिक क्रियाओ द्वारा पिघलाने तथा ढालने की कला उन्नति हुई। इस काल का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण मैहरोली का लौह स्तम्भ है।
- धातु विज्ञान की प्रगति का अनुमान सिक्कों व मोहरों से भी लगाया जा सकता है। ताम्र पत्रों पर लगी हुई मोहरे भी धातुकला का श्रेष्ठ उदाहरण है।

# 2. मुगलकाल में साहित्य, स्थापत्य कला का विकास

- मुगलकाल को उसकी बहुमुखी सांस्कृतिक गतिविधियों के कारण भारतीय इतिहास का द्वितीय क्लासिकी युग कहा गया है।
- इस काल में स्थापत्य कला, वास्तुकला, संगीतकला, चित्रकला और साहित्य का विकास हुआ अर्थात् ललितकला की उन्नति हुई।

## स्थापत्य कला

- मुगल सम्राट स्थापत्य कला के प्रेमी थे।
- मुगलकाल में ईरानी और हिन्दू स्थापत्य शैली के समन्वय द्वारा मुगलशैली का उद्‌भव व विकास हुआ।
- फर्ग्युसन ने इसे विदेशी शैली तथा हावेल ने इसे देशी व विदेशी शैलियों का उत्तम सम्मिश्रण बताया।

## मुगल स्थापत्य की मुख्य विशेषता

- संगमरमर के पत्थरों पर हीरे जवाहरात से की गई जड़ावत (पित्रादुरा)
- महलो तथा विलासभवनों में बहते पानी का प्रयोग।

## बाबर के समय की स्थापत्य कला

- मुगलकालीन स्थापत्य कला की शुरूआत बाबर के समय से होती है।
- बाबर को दिल्ली व आगरा की तुर्क तथा अफगाान सुल्तानों द्वारा निर्मित इमारत पसंद नहीं आई।
- बाबर ग्वालियर में मानसिंह व विक्रमाजीत महलों की स्थापत्य शैली से अत्यधिक प्रभावित हुआ।
- बाबर के महल केवल नमूने बने जो अधिक समय तक काल के प्रहारों को न सह सकें। उनकी केवल दो ईमारतें ही बची हैं।
  (1) पानीपत की काबुली बाग की विशाल मस्जिद (1529 ई.)
  (2) रूहेलखण्ड (उत्तरप्रदेश) सम्बल की जामा मस्जिद।
- बाबर ने ज्यामितीय विधि पर आधारित एक उद्यान नूर अफगान के नाम से आगरा में लगवाया (पहला बगीचा)।
- काबुल में बागेवफा व बागेकला तथा आगरा में रामबाग व जोहराबाग नाम से चारबाग बनवाए।

## हुमायूँ के समय मुगल स्थापत्य

- हुमायूँ भी यद्यपि कलाप्रेमी था किन्तु उसकी कोई कलात्मक ईमारत नही बची।
- हुमायूँ ने दिल्ली में दिन पनाह (विश्व का शरणस्थल) नामक एक नगर का निर्माण करवाया (1533) जो आज पुराने किले के नाम से विख्यात है।
- हुमायूँ ने दो अन्य ईमारते भी बनवाई–
  (1) आगरा के निकट मस्जिद
  (2) हिसार के फतेहबाद के निकट (फारसी शैली में)

## अकबर कालीन स्थापत्य कला

अकबर के शासन काल की सबसे पहली ईमारत दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा है जिसे अकबर की सौतेली माँ हाजी बेगम ने 1565 में बनवाया था। इसकी निम्न विशेषताएं है –

- दोहरी गुम्बदवाल भारत का पहला मकबरा है।
- इसमें मुगलवंश के सर्वाधिक लोगों को दफनाया गया है।
- इस मकबरे को ताजमहल का पूर्वागामी कहा जाता है।
- यह मकबरा फारसी आदर्श की भारतीय अभिव्यक्ति है।
- इसमें पहली बार चारबाग पद्धति का प्रयोग किया गया।
- इसमें प्रधान कारीगर मीरक मिर्जा ग्यासी भी ईरानी (फारसी) था।
- 1857 की क्रान्ति के समय बहादुरशाह जफर तथा उसके तीन पुत्र को यही 22 सितम्बर 1857 को हड़सन ने गिरफ्तार किया था।
- 1993 ई. में इसे यूनेस्को ने विश्वधरोहर सूची में शामिल किया।
- इस मकबरे की योजना फारसी मॉडल एवं वास्तुकला पंचरथ रचना से ली गई।
- अकबर के काल में सुन्दर ईमारतें बनी, उनके बारे में अबुल फजल ने कहा है कि "सम्राट सुन्दर ईमारतों की योजना बनाता है और अपने मस्तिष्क और ह्रदय के विचारों को पत्थर और गारे का रूप दे देता है। "
- अकबर ने हिन्दू मुस्लिम शैलियों का समन्वय किया और एक नई शैली का विकास किया।
- अकबर की नवीन शैली का सबसे पहला नमूना आगरा का लाल किला (कासीम खाँ के नेतृत्व में) है।
- आगरा के किले की रूपरेखा मानसिंह द्वारा बनाये गये ग्वालियर किले से मिलती जुलती है।
- इस किले में अकबरी महल (कोई सजावट नहीं) और जहाँगीरी महल (हिन्दू डिजाईन पर) है।
- इसमें 500 से अधिक महल हैं।
- अकबर द्वारा बनाया गया लाहौर का किला भी लगभग आगरा के किले के समान ही है (जहाँगीरी महल की नकल)
- अकबर की शिल्प कला की सबसे बड़ी सफलता उसकी नई राजधानी फतेहपुर सीकरी की सुन्दर ईमारतों में है (1571) जिन्हें 1986 ई. में यूनेस्को ने विश्वधरोहर की सूची में शामिल किया है। इसमें निम्न महल है –
  - दीवाने खास (एक घनाकार आकृति)
  - दीवाने आम (एक आयताकार )
  - पंचमहल/हवामहल (पिरामीड के आकार की नालन्दा के बौद्ध विहार ही प्रेरणा के आधार पर )
  - मरियम का महल (मुगल चित्रकारी पर आधारित)
  - जोधाबाई का महल (सीकरी का सबसे बड़ा महल, गुजराती शैली का प्रभाव)
  - बीरबल महल
  - जामा मस्जिद (फतेहपुर का गौरव कहा जाता है) (फर्ग्युसन ने इसे "पत्थर में रूमानी कथा" कहा है।
  - बुलन्द दरवाजा (एशिया का सबसे ऊँचा प्रवेश द्वार गुजरात जीत की खुशी में)
  - शेख सलीम चिश्ती का मकबरा
  - ईस्लाम शाह का मकबरा (पहली वर्गाकार मेहराब का प्रयोग)
  - तुर्की सुल्ताना का महल (पार्सी ब्राउन ने इसे स्थापत्य कला का मोती कहा है।
  - फर्ग्यूसन ने ठीक ही कहा है कि फतेहपुर सीकरी किसी महान व्यक्ति के मस्तिष्क का प्रतिबिम्ब है।
  - अपने शासन काल के अन्तिम समय में अकबर ने इलाहाबाद चालीस स्तम्भों वाले एक विशाल किले का निर्माण कराया।

**Note:-** 1561 ई. में अकबर की धाय माँ अनगा ने पुराने किले के सामने खेरूल मंजिल मस्जिद का निर्माण करवाया। इसमें सहायता दिल्ली के गवर्नर शिहाबुदीन ने की थी।

गुरू सलीम चिश्ती के मकबरे में जहाँगीर ने लाल बलुआ पत्थर के स्थान पर सफेद संगमरमर लगवाया था।

- अकबर ने चार किलो का निर्माण करवाया आगरा का शाही आवास, इलाहबाद दुर्ग (1583), लाहौर दुर्ग (1585), अटक दुर्ग।

## जहाँगीर की स्थापत्य कला

- जन्म – 13 अगस्त 1565
- राज्याभिषेक – 3 नवम्बर, 1605 (आगरा के किले में)
- जहाँगीर के काल में स्थापत्य कला में कोई महत्वपूर्ण विकास नहीं हुआ। जहाँगीर का ध्यान चित्रकला की ओर ज्यादा था।
- आगरा के पास सिकन्दरा में स्थित अकबर का मकबरा (जिसके निर्माण की योजना स्वयं अकबर ने बनाई थी) किन्तु निर्माण जहाँगीर ने 1613 ई. में करवाया था। यह एक गुम्बद विहीन मकबरा है । यह पाँच मंजिला इमारत है। जिसकी पाँचवी मंजिल पूर्णतः संगमरकी बनी हुई है।
- जहाँगीर के काल में नूरजहाँ के द्वारा बनाया गया एतमादुददौला मकबरा प्रसिद्ध है। इसमें पहली बार पित्रान्दुरा का प्रयोग किया गया था। (आगरा)
- सहादरा (लाहौर) में जहाँगीर का मकबरा उसकी बेगम नूरजहाँ ने बनवाया था जिसका नक्शा स्वयं जहाँगीर ने बनाया था। इसके ऊपर संगमरमर का एक मंडप था जिसे बाद में सिक्खों ने उतार लिया था।
- एकमात्र शासक जहांगीर है जिसके समय कोई मस्जिद का निर्माण नहीं हुआ।
- जहाँगीर ने कश्मीर मे प्रसिद्ध शालीमार बाग की स्थापना की थी।
- जहाँगीर के शासनकाल के अन्तिम व शाहजहाँ के शासनकाल के प्रारम्भिक दिनों में निर्मित दिल्ली में अब्दुल रहीम खान खाना का मकबरा है, जो मुख्य रूप से हुमायूँ के मकबरे की प्रतिकृति है। पर कुछ मामलों में इसमें ताजमहल का पूर्वाभास होता है।

## शाहजहाँ कालीन स्थापत्य कला

- शाहजहाँ का शासन काल मुगल स्थापत्य का चरमोत्कर्षक काल था इसलिए शाहजहाँ को निर्माताओं का प्रिंस कहा जाता है।
- लाल श्रीवास्तव ने शाहजहाँ के शासनकाल को वास्तुकला या स्थापत्य कला की दृष्टि से स्वर्णकाल कहा है।
- आगरा के किले में स्थित दीवानेआम (1627–28) संगमरमर से बनी शाहजहाँ की पहली ईमारत है।
- दीवानेखास (1637), मोती मस्जिद (आगरा किले की सबसे सुन्दर व आकर्षक ईमारत (1654), शीशमहल, खासमहल, नगीना मस्जिद आदि आगरे के किले में ईमारते बनवाईं।

## दिल्ली की ईमारतें –

- शाहजहाँ नें 1638–1648 ई. के बीच दिल्ली में शाजहाँबाद के नाम से राजधानी बनाई।
- शाहजहाँ ने दिल्ली में 1648 ई. में सबसे महत्वपूर्ण ईमारत लाल किला बनवाया जिसका शिल्पकार हमीद अहमद था। इसमे दो स्तर बनवाये – पश्चिमी द्वार – लाहौरी द्वार, दक्षिणी द्वार।
- इसी लाल किले को 2007 ई. में यूनेस्को ने विश्वधरोहर की सूची में शामिल किया। इसमें शाहजहाँ ने दीवाने आम (इसमें तख्ते तावज रखा जाता था।)
- दिवाने खास (इसके अन्दर की छत चाँदी की बनी है, अमीर खुसरो ने इसके लिए कहा है कि अगर दुनिया में कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है)।
- लाल किले के पास ही 1648 ई. में जामा मस्जिद बनवाई। यह भारत की ससे बड़ी मस्जिद है।
- शाहजहाँ ने अपनी प्रिय पत्नी अर्जुमंद बानो की याद में मुमताज महल का मकबरा बनाया जिसे ताजमहल कहते है।
- इसका निर्माण 1631–53 कुल 22 वर्षों मे 9 करोड़ रू. की लागत से हुआ।
- ताजमहल का मकबरा दिल्ली में स्थित हुमायूं के मकबरे से प्रेरित था।

- इसका योजनाकार उस्ताद अहमद और प्रधान मिस्त्री उस्ताद इंसा था।
- इसका आकार आयताकार है।
- हावेल के अनुसार यह भारतीय स्त्री जाति की देवतुल्य इमारत है।
- ताजमहल दामपत्य प्रेम का प्रतीक और कला प्रेमियों का मक्का बन गया है।
- 1983 ई. में इसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया।
- दिल्ली में निशांत बाग निर्माण शाहजहाँ के काल में ही हुआ।
- लाहौर में शालीमार, दिल्ली में हयात बाग व तालकटोरा में मुगल बाग बनवायें।
- **औरंगजेब कालीन ईमारतें** (पतनोमुख स्थापत्य कला)
- शाहजहाँ की मृत्यु के बाद मुगल स्थापत्य कला का पतन आरम्भ हो गया। औरंगजेब को कला के प्रति कोई रूचि नहीं थी।
- इसने बहुत कम ईमारत बनवाई तथा जो भी बनवाई वो बहुत साधारण थी।
- दिल्ली के लाल किले में मोती मस्जिद, लाहौर में जामा मस्जिद और लाहौर में बादशाही मस्जिद (1674) तथा औरंगाबाद के पास अपनी पत्नी रबिया–उर–दुर्रानी का मकबरा भी बनवाया (1678)। जिसे बीबी का मकबरा कहा जाता है। इसे भौड़ा ताजमहल या काला ताजमहल भी कहा जाता है।
- इसे ताजमहल की घटिया (फूहड़) नकल माना जाता हे और इसे दक्षिण का ताजमहल भी कहा जाता है।
- मुगलकाल में अन्य मकबरे भी बने जैसेः–
  (i) जहाँआरा का मकबरा– इस पर लिखा हुआ है कि सिवाय हरी घास के मेरी कब्र को किसी से भी ना ढका जाये क्योंकि केवल घास ही इस दीन की कब्र ढकने के लिये काफी है।
  (ii) खान–ए–खाना का मकबरा – दिल्ली
  (iii) हजरत निजामुद्दीन की दरगाह
  (iv) मिर्जा गालिब का मकबरा
  (v) सफदरजंग का मकबरा
  (vi) जन्तर–मन्तर – जयसिंह द्वितीय द्वारा बनाई गई वेधशाल, इन्होने 5 वेधशाल बनवाई थी।
  (vii) दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, मथुरा, वाराणसी।
  (viii) आगरा के अन्दर एक मस्जिद थी जिसे मस्जिद जहाँनामा कहा जाता है इसे शाहजहाँ की बड़ी पुत्री जहाँआरा ने बनवाया था।

## मुगलकालीन चित्रकला

- मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ ही चित्रकला में नवजीवन आ गया
- मुगल सम्राट चित्रकला के महान प्रेमी थे।
- सर्वप्रथम हैरात में बिहजाद (पूर्व का राफेल) नामक चित्रकार ने चित्रकला की एक नई शैली आरम्भ की थी।
- बिहजाद एक मात्र चित्रकार का वर्णन तजुक ए–बाबरी (बाबरनामा) में मिलता है।
- मुगल चित्रकला की नींव हुमायूँ के शासनकाल में पड़ी (चित्रकला का उद्भव मुगलकाल के हुमायूँ के शासनकाल में हुआ।
- हुमायूँ ने निर्वासन के दौरान उसने मीर सैयद अली (बहजाद का शिष्य) अरी अब्दुल समद नामक दो फारसी चित्रकारों की सेवा प्राप्त की और इन दोनों को अपने साथ भारत ले आया (1555)। और हम्जनामा या दास्तानें अमीर हम्जा का चित्र संग्रह करवाया।
- इनके चित्रों में अधिकांशतः चित्र सूती वस्त्रों पर चित्रित किये गये हैं।

- इनकी शैलियों में ईरानी, भारतीय और यूरोपीयन शैलियों का सम्मिश्रण पाया जाता है।
- हम्जनामा में कुल 1200 चित्र है। यह अकबर के काल में पूर्ण हुआ। मुल्ला कजवीनी ने अपने ग्रंथ नफाइसुल मासिर में हम्जनामा को हुमायूँ के मस्तिष्क की उपज बताया।
- ख्वाजा अब्दुस्समद को शीरी कलम की उपाधि दि गयी।
- मुहम्मद हुसैन कश्मीरी को जर्रीकलम की उपाधि दि।

## अकबर कालीन चित्रकला

- अकबर के काल में हिन्दू व फारसी शैलियों की मिली जुली चित्रकला का विकास हुआ।
- अकबर ने मुगल चित्रकारी को एक सुव्यवस्थित रूप दिया। उसने चित्रकारी के लिए अब्दुल समद के नेतृत्व में एक अलग से विभाग खोला।
- अकबर चित्रकार के लिये कहता है कि चित्रकार के पास ईश्वर को पहचानने का एक विचित्र साधन होता है।
- आइने अकबरी में मीर सैयद अली और अब्दुल समद के अलावा 15 प्रसिद्ध चित्रकारों के नाम प्राप्त होते है जिनमें से कम से कम 13 हिन्दू चित्रकार थे। कुल 17 चित्रकारों का उल्लेख–

  अकबर कालीन प्रमुख चित्रकारों में–
  (1) दशवंत – अग्रणीय चित्रकार (रज्मनामा का चित्रण किया)।
  (2) बसावन – सर्वोत्कृष्ठ चित्रकार
  (3) महेश
  (4) लालमुकुन्द
  (5) श्यामलदास आदि प्रमुख थे।
- इनके काल में भीति चित्रों का पहली बार प्रयोग किया गया।
- बसावन की सर्वोत्कृष्ठ कृति – एक कृशकाय (दुबला–पतला) घोड़े के साथ एक मजनूं को निर्जन क्षेत्र में भटकता हुआ एक चित्र है।
- अकबर के समय में पहली बार भित्ति चित्रकारी की शुरूआत हुई।
- दास्ताने अमीर हमजा को मीर सैयद अली और अब्दुल समद ने 1550 से 1560 ई. के बीच चित्रित किया। इसमें लाल, नीले, काले, हरे रंग का प्रयोग है, इसे पूर्ण कराने के लिये मीर सैयद अली को नियुक्त किया।

## जहाँगीर कालीन चित्रकला

- जहाँगीर का शासनकाल भारतीय चित्रकला का चरमोत्कर्ष काल था। चित्रकला का स्वर्णकाल था।
- जहाँगीर के एक दरबारी चित्रकार अबुल हसन ने जहाँगीर के राज्यारोहण का चित्र बनाया था जो बाद में तुजुक ए जहांगीरी के मुख्य पृष्ठ पर लगाया गया।
- जहाँगीर के काल में प्रमुख चित्रकारों में–
  (1) फारूख बेग – जहाँगीर के समय बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह का चित्र बनाया।
  (2) बिसनदास ( अग्रणीय चित्रकार) – फारस के शाही दरबार का चित्र बनाकर लाने के लिए भेजा।
  (3) उस्ताद मंसूर (सर्वोत्कृष्ठ चित्रकार) – साइबेरिया के बिरला सारस व बंगाल का एक अनोखा पुष्प का चित्र।
    - इसे जहाँगीर ने नादिर उल असर की उपाधि दी तथा यह पक्षियों की चित्रकला में विशेषज्ञ था।
  (4) दौलत – फारूक बेग का शिष्य था।
  (5) मनोहर – बसावन का पुत्र

(6) अबुल हसन – जहाँगीर ने इसे नादिर उल जमा की उपाधि दी। यह व्यक्तियों के चित्र बनाने में महारथी था। इन्होने एक चिनार के पेड़ पर असंख्य गिलहरियो का चित्र बनाया।

- अबुल हसन की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता थी उसकी रंग–योजना जो अत्यन्त प्रभावशाली, चित्ताकर्षण चटकार थी।

- जहाँगीर की चित्रकला में रूपवादी शैली की प्रधानता थी।
- राजपूत और पहाड़ी शैली का विकास औरंगजेब के समय में हुआ था।
- जहाँगीर के बाद मुगल चित्रकला प्रायः समाप्त हो गई जैसा कि पार्सी ब्राउन ने लिखा है कि उसके (जहाँगीर) देहान्त के साथ ही मुगल चित्रकला की आत्मा ही विलीन हो गई थी।

## शाहजहाँ कालीन चित्रकला

- शाहजहाँ को चित्रकला की अपेक्षा स्थापत्य कला में अधिक रूचि थी फिर भी उसने चित्रकला को प्रश्रय दिया।
- उसके समय के प्रसिद्ध चित्रकार फकीर उल्ला, मीर हासीम, मुरारी, हुनर मोहम्मद नादिर, अनुप और चित्रा प्रमुख थे।
- शाहजहाँ देवी संरक्षण में अपने चित्र बनवाना अधिक पसंद करता था।
- फिर अकबर के काल में रजबनामा तैयार की गई जिसमें दशवंत के चित्र है जो अन्य कहीं नहीं मिलते। दशवंत के चित्र खानदाने तूमैरिया + तूतीनामा में भी मिलते हैं।
- बाबर के काल में प्रसिद्ध चित्रकार बिजहाद को पूर्व का राफेल कहा गया है ।
- मुगल चित्रकला का सबसे प्रारम्भिक व महत्वपूर्ण चित्र संग्रह हम्जनामा है।
- अकबर ने चित्रकारी के विकास हेतु अब्दुल सम्मद के नेतृत्व में तस्वीर खाना (चित्रशाला) का निर्माण करवाया था।
- अकबर कालीन चित्रकार दशवंत ने रज्बनामा में चित्र बनाये थे।
- बसावन अकबर के समय का सर्वोत्कृष्ट चित्रकार था।
- जहाँगीर ने हेरात के प्रसिद्ध चित्रकार आकारिजा के नेतृत्व में आगरा में एक चित्रशाला की स्थापना की ।
- जहाँगीर के समय का सबसे बड़ा चित्रकार मंसूर था जो पक्षियों और फूलों के चित्र बनाने में माहिर था।

## विशेष

- जहांगीर ने उस्ताद मंसूर को नादिर उद असर एवं अबुल हसन को नादिर उद जमा की उपाधि दी थी।
- बिसनदास जहाँगीर के काल का प्रमुख चित्रकार था।

## मुगलकाल के प्रसिद्ध चित्रकार

1. बसावन – एक कृशकाय घोड़े के साथ मजनूं का निर्जन स्थान में भटकना।
2. मंसूर – साइबेरिया का दुर्लभ सारस, बंगाल का अनोखा पुष्प
3. अबुल हसन – तुजुके– जहाँगीरी के मुख पृष्ठ के लिए चित्र, एक चिनार के पेड़ पर असंख्य गिलहरियाँ का चित्र, ड्मूटर के सन्तपाल का चित्र
4. फारूख बेग –बीजापुर के सुल्तान आदिलशाह का चित्र
   (अकबर ने अब्दुल संमद को शीरी कलम की उपाधि से नवाजा था।)

# मुगलकालीन साहित्य

## बाबर

- बाबर साहित्य में बहुत रूचि लेता था। उसने तुर्की भाषा में अपनी आत्मकथा तुजुके–बाबरी (बाबरनामा) लिखी। बाबरनामा का चार बार फारसी तथा तीन बार अंग्रेजी में अनुवाद भी हुआ।
- बाबर ने एक नई काल शैली मुबइयान को प्रारम्भ किया।
- बाबर ने कविताओं का संग्रह दीवान तुर्कीनामा नाम से करवाया जो बहुत प्रसिद्ध हुआ।

## हुमायूँ

- हुमायूँ की आत्मकथा हुमायूँनामा की रचना हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम द्वारा लिखी गई। इसके एक खण्ड में बाबर का इतिहास एवं दूसरे खण्ड में हुमायूँ का इतिहास मिलता है।
- हुमायूँ के काल में निम्न रचना लिखी गई –
  (1) तज किरात उल वाकयात – जौहर आफता विंची
  इसमें हुमायूँ के जीवन का उतार चढाव है।
  (2) वाकयात ए मुश्ताकी
  यह रिजकुल्लाह मस्ताकी का लिखा ग्रन्थ है। इसमें लोदी और सूर काल की जानकारी है।
  (3) तारीखे रसीदी = मिर्जा हैदर दोगलत (हुमायूँ की शाही फौज का कमाण्डो था।)
  (इसमें मध्य एशिया के तुर्कों का इतिहास तथा हुमायूँ के काल का वर्णन है)
  (4) तजिकरात ए हुमायूँ व अकबर – लेखक बायजीद बयात

## अकबर कालीन साहित्य

- अकबर ने भारत में दरबारी इतिहास लेखन की परम्परा की शुरूआत की।
- अबुल फजल अकबर के दरबार में 59 श्रेष्ठ कवियों का उल्लेख करता है।
- अकबरनामा (आइने–अकबरी) – यह अबुल फजल द्वारा लिखा गया ग्रन्थ है जिसे कुल (1591–1598) सात वर्षों में लिखा गया।
- नफाइस–उल–मासिर – यह ग्रन्थ मीर अलाउद्दौला कजवीनी द्वारा लिखा गया है। यह अकबर के समय की प्रथम ऐतिहासिक पुस्तक है।
- मुन्तखब उल तवारिख – यह बदायूनी द्वारा अकबर के शासन काल में 1590 ई. में लिखा गया। इस पुस्तक को हिन्दुस्तान का आम इतिहास नाम से जाना जाता है।
- अकबर ने फैजी के अधीन एक अनुवाद विभाग की स्थापना की जिसके द्वारा कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों का फारसी भाषा में अनुवाद किया। जो निम्न है–
  (1) महाभारत का फारसी में अनुवाद – रज्जबनामा (बदायूनी + नकीबखाँ और अब्दुल कादिर)
  (2) रामायण का फारसी में अनुवाद – बदायूनी ने किया।
  (3) भागवत पुराण – राजा टोडरमल ने।
  (4) अथर्ववेद का – इब्राहिम सरहीन्दी ने।
  (5) गणितीय पुस्तक – लीलावती का फैजी ने।
  (6) कश्मीर के इतिहास राजतरंगिणी – मुल्ला शाह मोहम्मद ने।
  (7) पंचतंत्र का – अबुल फजल (अयार दानिश)
  (8) नल–दमयंती का – फैजी ने फारसी में अनुवाद किया।
  (9) 52 उपनिषदों का सग्रह – दारा शिकोह।

- अकबर के काल में पुराणों का पहली बार अनुवाद फारसी में हुआ।
- अकबर के समय हिन्दी का भी महत्व था। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे – तुलसीदास, अब्दुल रहीम खान खाना, बीरबल और मलिक मोहम्मद जायसी।

## जहाँगीर

- जहाँगीर चित्रकला प्रेमी था लेकिन उसके समय में कई साहित्य भी लिखे गये। जैसे – जहाँगीर द्वारा लिखित स्वयं की आत्मकथा तुजुके जहाँगीरी प्रसिद्ध है।
- इसका अन्तिम रूप से पूरा कार्य मोहम्मद हादी ने किया।
- इसके अलावा मोतमीद खाँ द्वारा लिखी इकबालनामा ए जहागीरी तथा रब्बाजा कामगार द्वारा लिखित मसीर–ए–जहाँगीरी प्रमुख रचना थी।

## शाहजहाँ

- शाहजहाँ की आत्मकथा शाहजहाँनामा की रचना इनायत खाँ ने की।
- मोहम्मद अमीन कजबीनी ने शाहजहां के समय का प्रथम सरकारी इतिहासकार था, जिसने अपनी पुस्तक पादशाहनामा में शाहजहाँ के शासन काल के प्रथम दस वर्षो का जिक्र किया है।
- शाहजहाँ के समय लिखा गया प्रथम ग्रन्थ अमले सालेह है। यह मोहम्मद सालेह द्वारा लिखा गया।
- औरंगजेब अपने साम्राज्य में इतिहास लेखन के विरूद्ध था।
- इसीलिए खफीखाँ ने मुन्तखब उल तवारिख की (औरंगजेब के शासनकाल की आलोचना) रचना गुप्त रूप से की थी।

### प्रमुख ग्रंथ

| ग्रंथ | लेखक |
|---|---|
| मुन्तखब–एल–लुबाब | मुहम्मद हाशिम या खफी खाँ |
| आलमगीरनामा | मिर्जा मुहम्मद काजिम शिराजी (औरंगजेब के समय अंतिम सरकारी इतिहासकार) |
| दीवान | बबर |
| तबकात–ए–अकबरी | अबुल फजल |
| तारीख–ए–दौलत–ए–शेरशाही | हसन अली खाँ |
| खुलासत उत तवारीख | सुजानराय भंडारी |
| तारीख–ए–अकबरी | ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद |
| नुस्खा–ए–दिलकुशा | भीमसेन |
| फुतुहात–ए–आलमगीरी | ईसरदास नागर |
| मखफी | जैबुन्निसाद (औरंगजेब की पुत्री) |
| तारीख ए आलमगीरी | आकिल खाँ |

## मुगलकालीन संगीत कला

- संगीतकला की सर्वाधिक उन्नति मुगल सम्राटों के दरबार या काल में हुई थी। बाबर और हुमायूँ दोनों ही संगीतप्रेमी थे तथा बाबर ने तो संगीत कला की एक पुस्तक भी लिखी थी किंतु संगीत कला अकबर के ही काल में अपने शिखर पर पहुँची।
- अकबर भारतीय शास्त्रीय संगीत को अधिक पसंद करता था।